शिक्षक-प्रशिक्षकों के वृत्तिक विकास हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन

बृजेश कुमार*
पी.के. साहू**

अध्यापक शिक्षण कार्यों, प्रबंधनों, संस्थानों एवं अध्यापकों के वृत्तिक विकास के उन्नयन हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अध्यापकों के लिए अनिवार्य होना चाहिए। उनकी पेशेवर उन्नति में सहायता देने हेतु एवं विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं एवं शिक्षण को रोचक बनाने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रतीत होती है। इसी आधार को ध्यान में रखते हुए शोधक के शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं — माध्यमिक स्तर पर शिक्षक शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन करना एवं स्व-वित्तपोषित एवं वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना। इसमें उत्तर प्रदेश के बी.एड. स्तर पर कार्यरत समस्त वित्तपोषित एवं स्व-वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षकों में से 100 शिक्षक-प्रशिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष में शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा स्वयं का व्यक्तित्व, विद्यार्थी-शिक्षकों को समझना, सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र, पाठ्यक्रम, शिक्षा के क्षेत्र में दक्षता, क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता, शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान को प्राथमिकता दी गई। वित्तपोषित एवं स्व-वित्तपोषित बी.एड. शिक्षक-प्रशिक्षकों की आवश्यकता समान स्तर पर पाई गई।

भूमिका

अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण व्यवस्था से है। एक सक्षम, आत्मनिर्भर, अनुशासित, चरित्रवान आदि गुणों से युक्त शिक्षक के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण आवश्यक है। उनकी उच्चकोटि की शिक्षा व्यवस्था जिसे न केवल पाठ्यचर्या से पूरा किया जा सकता है, बल्कि उसके लिए एक सुनियोजित प्रकल्प की आवश्यकता होती है। इसी कड़ी में अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। समाज में अध्यापक की निर्णायक भूमिका होती है। शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्रीय विकास में शिक्षक-प्रशिक्षकों के योगदान के लिए उत्तरदायी कारकों में से निस्संदेह सेवाकालीन प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है।

* *शोधार्थी*, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश – 211002
***प्रोफ़ेसर*, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश – 211002

सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता के महत्व को ध्यान में रखते हुए बुच (1968) ने स्वीकार किया कि, "सेवाकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत वे समस्त क्रियाकलाप समाहित किये जा सकते हैं, जिनकी सहायता से अध्यापक/अध्यापिकाएँ अपनी उद्यमगत योग्यता में वृद्धि सेवारत अवस्था में कर सकते हैं।" अतः शिक्षक-प्रशिक्षकों को वृत्तिक विकास हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता से संबंधित विभिन्न कौशलों में दक्ष बनाया जाए जिससे शिक्षक-प्रशिक्षक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में योगदान दे सकें।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

भारत में शिक्षक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पर सीमित शोध कार्य हुआ है। यद्यपि उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों के प्रशिक्षण आवश्यकता पर कुछ अध्ययन तथा विचारों को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है —

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की स्थायी समिति (1975–76) ने सेवारत शिक्षा पर कम से कम प्रत्येक पाँच वर्ष में एक महीने के लिए विद्यालयी शिक्षक व शिक्षक-प्रशिक्षकों को सेवारत प्रशिक्षण प्राप्त करना ज़रूरी होना चाहिए तथा सेवारत शिक्षा मुख्य रूप से पत्राचार पाठ्यक्रमों के द्वारा संचालित की जानी चाहिए।

बेनेकेनाल (1996) ने कर्नाटक के महाविद्यालयी अध्यापकों के सेवाकालीन शिक्षा की आवश्यकता पर शोध कार्य किया जिसका उद्देश्य वर्तमान के साथ-साथ भविष्य में अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण आवश्यकता क्षेत्र को ज्ञात करना था। अध्ययन के परिणामस्वरूप निष्कर्ष में पाया गया कि —

- व्यवसाय की उन्नति।
- मूल्यांकन प्रविधियों में प्रवीणता।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की समस्याओं का समाधान।
- भविष्य के महाविद्यालयी अधिगमकर्ताओं का ज्ञान।
- आधुनिक शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में रुचि उत्पन्न करना।
- राष्ट्रीय एकता के पोषक वातावरण के निर्माण;
- शिक्षक शिक्षार्थी संबंधों में खुलापन लाने के कौशल में प्रवीणता।
- विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास करने वाले अधिगम अनुभव आदि के आयोजन हेतु अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण की आवश्यकता व्यक्त की गई।

सिंह और साहू (2010) ने अपने शोध में पाया कि सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु विश्वविद्यालय और उसके संघटक महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को उनके व्यक्तित्व, शिक्षण, शोध और अन्य बिंदुओं में सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

अध्यापक शिक्षा पर जस्टिस वर्मा (2012) आयोग ने निम्न बिन्दुओं पर सेवाकालीन प्रशिक्षा से संबंधित सुझाव दिए —

- शिक्षकों को तत्कालीन परिप्रेक्ष्यों का ज्ञान होना चाहिए।
- प्रत्येक समय नवीन शिक्षण कौशलों का विकास।

- विद्यार्थियों को समझना व उनका विश्लेषण करने की क्षमता।
- अध्यापकों को अपने क्षेत्र में नए-नूतन कार्यक्रमों का ज्ञान होना।
- तत्कालीन नवीन ज्ञान होना।
- तार्किक ज्ञान होना।
- वृत्तिगत विकास हेतु वर्कशॉप, सेमीनार, कॉन्फ्रेंस में भाग लेना।
- तत्कालीन गुणात्मक शिक्षक-प्रशिक्षक पाठ्यक्रम का नियोजन व सामग्री इत्यादि का ज्ञान होना।
- अच्छा शिक्षक बनने की दक्षता रखना।
- समय-समय पर प्रशिक्षण का आकलन करना।
- ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों तथा खंड/मण्डल स्रोत केंद्र (बी.आर.सी.) जैसे संस्थानों को बेहतर बनाना व उचित संसाधनों का विकास करना।
- सेवाकालीन शिक्षण में नीतिगत शिक्षा का ज्ञान होना।

वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षक शिक्षण कार्यों, प्रबन्धनों, संस्थानों एवं शिक्षकों के वृत्तिक विकास के उन्नयन हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण विभिन्न स्तरों पर कार्यरत शिक्षकों के लिए अनिवार्य होना चाहिए। उनकी पेशेवर उन्नति में सहायता देने हेतु, विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं एवं शिक्षण को रोचक बनाने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रतीत होती है। इसमें समय-समय पर बदलाव एवं सेवारत शिक्षकों का प्रशिक्षण नियमित किया जाना उचित होगा।

ऐसे बिन्दुओं के आधार पर यह प्रासंगिक होगा कि बदलते परिवेश में शिक्षक-प्रशिक्षकों से जुड़ी सेवाकालीन प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान की जाए। इस पृष्ठभूमि पर वर्तमान अध्ययन हेतु शोधक द्वारा शोध किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे —

- माध्यमिक स्तर पर शिक्षक शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता का अध्ययन करना।
- वित्तपोषित एवं स्व-वित्तपोषित शिक्षक शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

इस अध्ययन के लिए निम्न शून्य परिकल्पना थी —

- शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता में सार्थक संबंध नहीं है।
- विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है।
- सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है।
- पाठ्यक्रम में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है।

- शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है।
- क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है।
- शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के समस्त वित्तपोषित एवं स्व-वित्तपोषित शिक्षक शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों का जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

न्यादर्श

सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु पाँच वित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से 50 कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं पाँच स्व-वित्तपोषित बी.एड. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से 50 कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया।

उपकरण

इस शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन के लिए शोधक द्वारा स्व-निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। विभिन्न विषय विशेषज्ञों तथा शिक्षकों से प्राप्त सुझाव तथा संबंधित साहित्य के आधार पर प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें सेवाकालीन प्रशिक्षण के सात घटकों को सम्मिलित किया गया। प्रश्नावली में सम्मिलित सात घटक थे — स्वयं का व्यक्तित्व, विद्यार्थी-शिक्षकों को समझना, सामान्य शिक्षण व शिक्षणशास्त्र, पाठ्यक्रम, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता, क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता एवं शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान, इस प्रश्नावली में कुल 36 कथन दिए गए थे। प्रत्येक कथन के सामने तीन विकल्प वाले उत्तर दिए गए थे। सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु आवश्यक प्रश्नावली में बिन्दुवार कथनों की संख्या निम्नवत है —

क्र. सं.	सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु आवश्यक बिन्दु क्षेत्र	कथन संख्या
1.	स्वयं का व्यक्तित्व	06
2.	विद्यार्थी-शिक्षकों को समझना	05
3.	सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र	05
4.	पाठ्यक्रम	05
5.	शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता का विकास	06
6.	क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता	04
7.	शैक्षिक तकनीक का ज्ञान	05

आँकड़ों का विश्लेषण तथा विवेचन

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए काई स्क्वायर (x^2) का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त प्रतिशत विश्लेषण का प्रयोग किया गया। सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु बी.एड. शिक्षक-प्रशिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकता का घटकवार विवरण तालिका 1 में दिया गया है।

तालिका 1 से ज्ञात होता है कि अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षक सेवाकालीन प्रशिक्षण के विभिन्न आयामों

तालिका 1 — घटकवार प्रशिक्षण आवश्यकता का विश्लेषण

क्र. सं.	घटक	अत्यन्त आवश्यक (प्रतिशत विश्लेषण)	सामान्य आवश्यक (प्रतिशत विश्लेषण)	अनावश्यक (प्रतिशत विश्लेषण)	कुल प्रतिशत विश्लेषण
1.	स्वयं का व्यक्तित्व	74%	23%	3%	100%
2.	विद्यार्थी-शिक्षकों को समझना	79%	20%	1%	100%
3.	सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र	77%	21%	2%	100%
4.	पाठ्यक्रम	79%	21%	0%	100%
5.	शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता का विकास	78%	20%	2%	100%
6.	क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता	80%	19%	1%	100%
7.	शैक्षिक तकनीक का ज्ञान	87%	13%	0%	100%

पर शिक्षा प्राप्त करने की अत्यंत आवश्यकता को महसूस करते हैं। विभिन्न घटकवार आवश्यकताओं की तुलना दर्शाती है कि अत्यधिक मात्रा में (80 प्रतिशत से 87 प्रतिशत) शिक्षक-प्रशिक्षक क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता एवं शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान के प्रति अत्यंत आवश्यकता व्यक्त करते हैं। इस क्रम में अन्य प्रशिक्षण आवश्यकताओं में विद्यार्थी-शिक्षकों को समझना, पाठ्यक्रम, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता, सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र में दक्षता और स्वयं के व्यक्तित्व विकास में दक्षता के प्रति सेवाकालीन प्रशिक्षण को अधिक आवश्यक मानते हैं।

स्वयं के व्यक्तित्व के विकास हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध के x^2 परीक्षण को तालिका 2 में दिया गया है।

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अवलोकित x^2 का मान 2.19 है, जोकि (मुक्तांश=2) पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से कम है। अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है। इस घटक के लिए बनी शून्य परिकल्पना स्वयं के व्यक्तित्व के विकास हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है, यह स्वीकार की जाती है। अतः वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के स्वयं के व्यक्तित्व विकास हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर और स्व-वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के स्वयं के व्यक्तित्व विकास हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2 — स्वयं के व्यक्तित्व के विकास हेतु शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण

संस्थागत पृष्ठभूमि	अत्यन्त आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2×3 सारणी से x^2 का मान
वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	36 (72%)	12 (24%)	02 (4%)	50	2.19*
स्व-वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	38 (76%)	11 (22%)	01 (2%)	50	
योग	74	23	03	100	

*0.05 सार्थक स्तर असार्थक है।

उपरोक्त तालिक 2 से ज्ञात होता है कि अत्यधिक संख्या (74) में शिक्षक-प्रशिक्षक स्वयं के व्यक्तित्व के विकास हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता को अधिक आवश्यक मानते हैं। स्वयं के व्यक्तित्व विकास से संबंधित आवश्यकता जिन बिन्दुओं से संबंध रखती है, वे हैं — स्वयं अनुशासित रहने के कौशल, प्रसन्न चित्त रहने का तरीका, स्वयं की सोच में नवीनता लाना, सामान्य से हटकर मौलिक सोच रखने का तरीका, एक अच्छा वक्ता बनने का कौशल, शैक्षिक संगोष्ठियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के तरीके आदि। इनमें सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता समान स्तर की पाई गई।

विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने हेतु अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मान 0.38 है, जोकि (मुक्तांश=2) पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से कम है। अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है। इस घटक के लिए बनी शून्य परिकल्पना विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है, स्वीकार की जाती है।

अतः वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों हेतु विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर और स्व-वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों हेतु विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 3 से ज्ञात होता है कि अत्यधिक संख्या (79) में शिक्षक-प्रशिक्षक विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता को अधिक आवश्यक मानते हैं। विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने से संबंधित आवश्यकता जिन बिन्दुओं से संबंध रखती है, वे हैं — विद्यार्थी-शिक्षकों की योग्यता को पहचानने की विधि का तरीका, विद्यार्थी-शिक्षकों

तालिका 3 — विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने हेतु शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण

संस्थागत पृष्ठभूमि	अत्यंत आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2×3 सारणी से x^2 का मान
वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	40 (80%)	9 (18%)	01 (2%)	50	0.38*
स्व-वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	39 (78%)	11 (22%)	0 (0%)	50	
योग	79	20	01	100	

*0.05 सार्थक स्तर असार्थक है।

के प्रशिक्षण आवश्यकता को जाँचने का कौशल, विद्यार्थी-शिक्षकों की शैक्षिक समस्या को दूर करने के उपाय, विद्यार्थी-शिक्षकों में सृजनात्मक विकास लाने की विधियाँ, विद्यार्थी-शिक्षकों का मार्गदर्शन करने की समझ रखना आदि। इनमें सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता समान स्तर की पाई गई है। सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण तालिका 4 में दिया गया है।

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मान 1.22 है, जोकि (मुक्तांश=2) पर 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से कम है। अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है। इस घटक के लिए बनी शून्य परिकल्पना सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है, स्वीकार की जाती है।

अतः वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर और स्व-वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 4 से ज्ञात होता है कि अत्यधिक संख्या (77) में शिक्षक-प्रशिक्षक सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता को अधिक आवश्यक मानते हैं। सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र से संबंधित आवश्यकता जिन बिन्दुओं से संबंध रखती है, वे हैं — अध्यापक शिक्षण कार्य रोचक बनाने का कौशल, कक्षा में विद्यार्थी-केंद्रित उपागमों के प्रयोग करने का कौशल, विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन का कौशल, समूह शिक्षण कौशल का ज्ञान, समेकित शिक्षण कौशल का ज्ञान आदि। इनमें सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता समान स्तर की पाई गई है।

तालिका 4 — सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र हेतु शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण

संस्थागत पृष्ठभूमि	अत्यंत आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2×3 सारणी से x^2 का मान
वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	37 (74%)	12 (24%)	01 (2%)	50	1.22*
स्व-वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	40 (80%)	9 (18%)	1 (2%)	50	
योग	77	21	02	100	

*0.05 सार्थक स्तर असार्थक है।

पाठ्यक्रम में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण तालिका 5 में दिया गया है।

तालिका 5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मान 0.11 है, जोकि (मुक्तांश=2) 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से कम है। अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है। इस घटक के लिए बनी शून्य परिकल्पना पाठ्यक्रम में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है, स्वीकार की जाती है।

अतः वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के पाठ्यक्रम में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर और स्व-वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के पाठ्यक्रम में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 5 से ज्ञात होता है कि अत्यधिक संख्या (79) में शिक्षक-प्रशिक्षक पाठ्यक्रम में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता को अत्यंत आवश्यक मानते हैं। पाठ्यक्रम में दक्षता से संबंधित आवश्यकता जिन बिन्दुओं से संबंध रखती है, वे है — अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम प्रस्तुति को रुचिकर बनाने का कौशल, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में विभिन्न पहलुओं के विकास का कौशल, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों के विकास का कौशल, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का तरीका आदि। इनमें सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता समान स्तर की पाई गई।

शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण तालिका 6 में दिया गया है।

तालिका 6 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मान 0.54 है, जोकि

तालिका 5 — पाठ्यक्रम में दक्षता हेतु शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण

संस्थागत पृष्ठभूमि	अत्यंत आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2×3 सारणी से x^2 का मान
वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	40 (80%)	10 (20%)	0 (0%)	50	0.11*
स्व-वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	39 (78%)	11 (22%)	0 (0%)	50	
योग	79	21	0	100	

*0.05 सार्थक स्तर असार्थक है।

(मुक्तांश=2) 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से कम है। अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है। इस घटक के लिए बनी शून्य परिकल्पना शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता हेतु अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं अध्यापक प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है, स्वीकार की जाती है।

अतः वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर और स्व-वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 6 से ज्ञात होता है कि अत्यधिक संख्या (78) में शिक्षक-प्रशिक्षक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता को अत्यन्त आवश्यक मानते हैं। पाठ्यक्रम में दक्षता से संबंधित आवश्यकता जिन बिंदुओं से संबंध रखती है, वे हैं—समावेशी पाठ्यक्रम की समझ; समाजशास्त्रीय विश्लेषणात्मक और अवधारणात्मक साधनों की

तालिका 6 — शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता हेतु शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण

संस्थागत पृष्ठभूमि	अत्यंत आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2×3 सारणी से x^2 का मान
वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	38 (76%)	11 (22%)	1 (2%)	50	0.54*
स्व-वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	40 (80%)	9 (18%)	1 (2%)	50	
योग	78	20	2	100	

*0.05 सार्थक स्तर असार्थक है।

समझ; समुदाय के साथ जुड़ने के लिए प्रायोगिक अनुभव की समझ; ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों की दृष्टि से विद्यालयी ज्ञान के सैद्धांतिक आधारों की समझ; अध्यापन और अधिगम के पाठ्यक्रम की समझ आदि। इनमें सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता समान स्तर की पाई गई।

क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण तालिका 7 में दिया गया है।

तालिका 7 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मान 0.91 है, जोकि (मुक्तांश=02) 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से कम है। अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है। इस घटक के लिए बनी शून्य परिकल्पना क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है, स्वीकार की जाती है।

अतः वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर और स्व-वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 7 से ज्ञात होता है कि अत्यधिक संख्या (80) में शिक्षक-प्रशिक्षक क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता को अत्यन्त आवश्यक मानते हैं। क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता से संबंधित आवश्यकता जिन बिंदुओं से संबंध रखती है, वे हैं — छात्राध्यापक कार्यक्रम में विद्यालयी परिदृश्य के साथ संबंध स्थापित करने की समझ, प्रायोगिक क्रियाकलाप के दौरान सभी पाठ्यक्रमों में अधिन्यास (असाइनमेंट) करवाने की समझ, प्रायोगिक क्रियाकलाप के मध्य एक कड़ी के रूप में कार्य करने की समझ आदि। इनमें सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता समान स्तर की पाई गई।

तालिका 7 — क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता हेतु शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण

संस्थागत पृष्ठभूमि	अत्यंत आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2×3 सारणी से x^2 का मान
वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	41 (82%)	08 (16%)	1 (2%)	50	0.91*
स्व-वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	39 (78%)	11 (22%)	0 (0%)	50	
योग	80	19	1	100	

*0.05 सार्थक स्तर असार्थक है।

शैक्षिक तकनीक के ज्ञान में शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध के x^2 परीक्षण को तालिका 8 में दिया गया है।

तालिका 8 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अवलोकित x^2 का मान 1.33 है, जोकि (मुक्तांश=2) 0.05 सार्थकता स्तर के सारणी मान से कम है। अतः इस क्षेत्र के लिए x^2 का मान सार्थक नहीं है। इस घटक के लिए बनी शून्य परिकल्पना शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान हेतु शिक्षक शिक्षा संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता संबंधित नहीं है, स्वीकार की जाती है।

अतः वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान में विकास हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर और स्व-वित्तपोषित संस्थाओं की पृष्ठभूमि एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान में विकास हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिक 8 से ज्ञात होता है कि अत्यधिक संख्या (87) में शिक्षक-प्रशिक्षक शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान में विकास हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता की अत्यंत आवश्यक मानते हैं। शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान में विकास से संबंधित आवश्यकता जिन बिंदुओं से संबंध रखती है, वे हैं — मुक्त शैक्षिक संसाधनों को खोजने का ज्ञान, शिक्षण कार्य में खुले शैक्षिक संसाधनों के उपयोग का तरीका, शिक्षण कार्य में 'मैसिव ओपेन ऑनलाइन कोर्स (एम.ओ.ओ.सी.)' के कौशल का ज्ञान, आई.सी.टी. के कौशल का ज्ञान, आई.सी.टी. के शिक्षण में उपयोग के तरीके आदि। इनमें सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता समान पाई गई।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

सेवाकालीन प्रशिक्षण के क्षेत्र में और अधिक दक्षता के लिए वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षकों और स्व-वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षकों में अधिकतर (80% से 87%) को सेवाकालीन प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता अग्रलिखित क्षेत्रों में है —

तालिका 8 — शैक्षिक तकनीक के ज्ञान में शिक्षक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकताओं के संबंध का x^2 परीक्षण

संस्थागत पृष्ठभूमि	अत्यंत आवश्यक	सामान्य आवश्यक	अनावश्यक	योग	2×3 सारणी से x^2 का मान
वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	45 (90%)	05 (10%)	0 (0%)	50	1.33*
स्व-वित्तपोषित संस्था के शिक्षक-प्रशिक्षक	42 (84%)	08 (16%)	0 (0%)	50	
योग	87	13	1	100	

*0.05 सार्थक स्तर असार्थक है।

- स्वयं के व्यक्तित्व विकास में।
- विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने में।
- सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र की समझ में।
- पाठ्यक्रम विकास में।
- शिक्षा के परिप्रेक्ष्य के दक्षता विकास में।
- क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप के दक्षता विकास में।
- शैक्षिक तकनीकी कौशल में।
- स्वयं के व्यक्तित्व विकास में वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षकों व स्व-वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षकों (72 प्रतिशत और 76 प्रतिशत) सेवाकालीन प्रशिक्षण को अत्यंत आवश्यक मानते हैं।
- 80 प्रतिशत वित्तपोषित संस्थानों के शिक्षक-प्रशिक्षक और 78 प्रतिशत स्व-वित्तपोषित संस्थानों के शिक्षक-प्रशिक्षक विद्यार्थी-शिक्षकों को समझने के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण को अत्यंत आवश्यक मानते हैं।
- सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र के लिए 74 प्रतिशत और 80 प्रतिशत शिक्षक-प्रशिक्षक सेवाकालीन शिक्षा को अत्यंत आवश्यक मानते हैं।
- 80 प्रतिशत वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षक व 78 प्रतिशत स्व-वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षक पाठ्यक्रम में दक्षता बढ़ाने हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण को अत्यंत आवश्यक मानते हैं।
- 76 प्रतिशत वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षकों ने शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता बढ़ाने की अनुशंसा की या सुझाव दिया तथा 80 प्रतिशत स्व-वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षकों ने भी इसके लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण को अत्यंत आवश्यक माना।
- 82 प्रतिशत वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षक तथा 78 प्रतिशत स्व-वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षक क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप के विकास हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक मानते हैं।
- 90 प्रतिशत वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षक तथा 84 प्रतिशत स्व-वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षक शैक्षिक तकनीकी के ज्ञान के विकास हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक मानते हैं।

उपर्युक्त परिणाम को देखते हुए कहा जा सकता है कि वित्तपोषित व स्व-वित्तपोषित शिक्षक-प्रशिक्षकों को विभिन्न बिन्दुओं, जैसे — स्वयं के व्यक्तित्व का विकास, विद्यार्थी-शिक्षकों को समझना, पाठ्यक्रम विकास, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता, प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता, सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र में दक्षता एवं शैक्षिक तकनीकी में दक्षता आदि में, सेवाकालीन प्रशिक्षण दिए जाने की अत्यंत आवश्यकता महसूस हुई है।

शैक्षिक निहितार्थ

आधुनिक समय में अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में सेवाकालीन प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता महसूस की जा रही है। इन घटकों द्वारा विभिन्न स्तरों पर कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के वृत्तिक विकास हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता बिंदुवार महसूस हो रही है, जैसे — स्वयं के व्यक्तित्व का विकास, विद्यार्थी-शिक्षकों को समझना, सामान्य शिक्षण एवं शिक्षणशास्त्र का ज्ञान, पाठ्यक्रम, विद्यार्थी-शिक्षकों के विकास में दक्षता, सैद्धान्तिक पाठ्यक्रमों का ज्ञान, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में दक्षता,

विद्यालयी पाठ्यचर्या संबंधित विषय में दक्षता, क्षेत्र/प्रायोगिक क्रियाकलाप में दक्षता, कार्यक्रम कार्यान्वयन हेतु दक्षता, नवाचारी शिक्षणशास्त्र में प्रशिक्षण की आवश्यकता, प्रशिक्षण तकनीक कौशल का ज्ञान, इन्टर्नशिप शिक्षण कार्य का ज्ञान, शैक्षिक तकनीक (ओ.ई.आर., आई.सी.टी., एम.ओ.ओ.सी.) का ज्ञान, आकलन एवं मूल्यांकन का ज्ञान, अनुसंधान का ज्ञान, क्रियात्मक अनुसंधान का ज्ञान, संस्थान की गुणवत्ता का ज्ञान, भविष्यपरक नियोजन कौशल के ज्ञान से संबंधित विभिन्न घटकों द्वारा शिक्षक शिक्षा संस्थाओं में सेवा-पूर्व प्रशिक्षित शिक्षकों व सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षकों हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि शिक्षक शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थी-शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों का सर्वांगीण विकास किया जा सके।

संदर्भ

कुण्डु सी. एल. 1988. *इण्डियन इयर बुक ऑन टीचर एजुकेशन*. स्टारलाइन पब्लिशर्स प्रा.लि., नयी दिल्ली.

कुमार जे. और आर लाल. 1980. *यूज़ ऑफ़ माइक्रोटीचिंग इन इंप्रूविंग जनरल टीचिंग कॉम्पिटेन्सी ऑफ़ इन सर्विस टीचर्स*. रा.शै.अ.प्र.प., हरियाणा.

दुबे शरतेन्दु, सत्य नारायण (नवीन संस्करण). 2014. *अध्यापक शिक्षा*. शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद.

नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन. 2016. *रिपोर्ट ऑफ़ द कमेटी फ़ॉर इवैल्यूएशन ऑफ़ द न्यू एजुकेशन पॉलिसी*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1992. *नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन, 1986*. (विदमोडिफ़िकेशन अण्डरटेकेन इन 1992). नयी दिल्ली.

———. 2014. *राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अधिसूचना*. भारत का राजपत्र, नयी दिल्ली.

भट्टाचार्य, जी.सी. 2016–17. *अध्यापक शिक्षा*. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा.

बेनेकेनाल और साहू. 1996. *फ़ॉरकास्टिंग नीड्स एंड रिसोर्स पोटेंशियल्स फ़ॉर इन सर्विसिज़ एजुकेशन ऑफ़ कॉलेज टीचर्स इन कर्नाटका टुवर्ड्स 2005*. अप्रकाशित शोध ग्रंथ, अहल्या विश्वविद्यालय, इंदौर शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्. 1970. *एजुकेशन एण्ड नेशनल डेवलपमेंट रिपोर्ट ऑफ़ द एजुकेशन कमीशन*, 1964–66. वॉल्यूम 03. हायर एजुकेशन. नयी दिल्ली.

———. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

सक्सेना एन.आर., बी.के. मिश्रा और आर.के. मोहन्ती. 2008. *अध्यापक शिक्षा*. लाल बुक डिपो, मेरठ.

सिंह और साहू. 2010. *उच्च स्तर पर कार्यरत अध्यापक प्रशिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन*. अप्रकाशित शोध ग्रंथ, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद.